10240

E

No. of Printed Pages : 12

Summative Assessment-I, 2015-16

Subject : Hindi (A) (हिन्दी-अ)

Class : X

Time : 3 Hrs.] **[M. M. : 90**

सामान्य निर्देश :

(i) इस प्रश्न-पत्र के चार खण्ड हैं—क, ख, ग और घ।

(ii) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

खण्ड 'क' (अपठित बोध)

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए— 5

अनुशासनबद्धता मानव-जीवन के मार्ग में बाधक नहीं अपितु उसको पूर्ण उन्नति तक पहुँचाने के लिए अनुकूल अवसर प्रदान करती है। अनुशासन के बिना तो मानव-जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

विद्यार्थी जीवन में तो अनुशासन का बहुत महत्व है। आज अनुशासनहीनता के कारण साल में छह महीने विश्वविद्यालयों में हड़तालें हो जाती हैं। तोड़-फोड़ करना तो विद्यार्थी का कर्तव्य बन गया है। छोटी-छोटी बातों में मारपीट हो जाती है।

अतः हर मनुष्य का कर्तव्य है कि अनुशासन का उल्लंघन न करे। यह विचित्र होते हुए भी कितना सत्य है कि अनुशासन एक प्रकार का बंधन है परन्तु मनुष्य को स्वच्छंद रूप से अपने अधिकारों को पूरा सदुपयोग करने का अवसर भी प्रदान करता है। वह एक ओर बंधन है तो दूसरी मुक्ति भी।

(i) गद्यांश में अनुशासन को माना गया है—

(क) बंधन से मुक्ति

(ख) स्वच्छंदता और मुक्ति

(ग) एक ओर बंधन तो दूसरी ओर मुक्ति भी

(घ) हड़तालों से निपटने का तरीका।

(ii) मनुष्य का यह परम कर्तव्य माना जाता है कि वह –

(क) समाज के नियमों में आवश्यकतानुसार ढील दे सकता है।

(ख) अनुशासन के विरुद्ध तनिक भी आचरण न करे।

(ग) अनुशासनप्रिय लोगों के साथ रहे।

(घ) जीवन में अनुशासित रहे; पर आदत डाले।

(iii) विश्वविद्यालयों में होने वाली हड़तालों का मुख्य कारण है–

(क) अध्ययन के प्रति उदासीनता

(ख) परीक्षा समय से न होना

(ग) अनुशासनहीन छात्रों को प्रवेश देना

(घ) अनुशासनहीनता।

(iv) तोड़फोड़ परस्पर मारपीट तथा अन्य क्रियाकलापों द्वारा शिक्षण-संस्थाओं के वातावरण को दूषित किया जाना प्रमाण है–

(क) छात्रों के साथ भेदभाव का।

(ख) छात्रों के अनुशासनहीन होने का।

(ग) शिक्षकों के द्वारा न पढ़ाये जाने का।

(घ) अभिभावकों की उदासीनता का।

(v) जीवन में अनुशासित रहने से व्यक्ति–

(क) दब्बू बन जाता है

(ख) उदासीन और निष्क्रिय हो जाता है

(ग) उन्नति के लिए अनुकूल अवसर प्राप्त करता है

(घ) साथियों के साथ तालमेल बिठा सकता है।

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए— 5

इस संसार में प्रत्येक मनुष्य जीवन में किसी–न–किसी के प्रति अपनी आस्था जरूर रखता है। आस्था संसार में जीने और आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान करती है। आस्था हमारे मन को दुख तथा तनाव से मुक्त करती है और हमें यह आभास होता है कि कोई तो है, जो हमारे दुखों को देख रहा है और वही हमें इससे मुक्ति दिलाता है। हमें शक्ति प्रदान करता है और लड़ने की ऊर्जा देता है। वैज्ञानिकों ने भी इस पर कई शोध किए हैं। आस्था के ऊपर हार्वर्ड विश्वविद्यालय से सम्बन्ध रखने वाले मैक्लीन अस्पताल के शोधकर्ताओं ने भी यह पाया है जो लोग देवताओं की शक्ति में विश्वास रखते हैं और उनकी आराधना, उपासना करते हैं उन लोगों के मन में आस्था न रखने वालों के मुकाबले चिंता कम होती है तथा जीवन की अनिश्चितता को लेकर उनमें सहनशक्ति अधिक होती है।

(i) आस्थावान लोगों में आस्था न रखने वालों की अपेक्षा अधिक होती है—

(क) सहनशक्ति तथा चिंताविहीनता

(ख) अनुरागप्रवृत्ति और निडरता

(ग) वाक्पटुता तथा स्पष्टवादिता

(घ) चिंताकुलता और व्यावहाकिता।

(ii) आस्था का सहज गुण यह है कि वह व्यक्ति को शक्ति प्रदान करती है—

(क) पढ़ने तथा लिखने की।

(ख) प्रातःकाल समय से जगने की।

(ग) जीने की और उन्नति करने की।

(घ) समय के अनुसार कार्य करने की।

(iii) आस्थावान व्यक्ति के मन में सदा भरोसा बना रहता है कि वह—

(क) अवश्य तरक्की करेगा।

(ख) दुख नहीं झेलेगा।

(ग) दुखों की परवाह नहीं करता क्योंकि उसे मालूम है कि उसकी रक्षा करने वाला कोई है।

(घ) दुखों से बेपरवाह रहता है।

(iv) जो व्यक्ति ईश्वर पर आस्था रखता है, उसे कहते हैं–

(क) आस्थिक

(ख) आस्तिक

(ग) नास्तिक

(घ) दैवीय

(v) ''जीवन की अनिश्चितता को लेकर उनमें सहनशक्ति अधिक होती है'' वाक्य है–

(क) सरल वाक्य

(ख) संयुक्त वाक्य

(ग) जटिल वाक्य

(घ) मिश्र वाक्य

3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

बस फूलों का बाग नहीं, जीवन में लक्ष्य हमारा,
उससे आगे बहुत दूर है, बहुत दूर तक जाना।

थोड़ी मात्रा सफलता से ही, जो संतोष किए हैं,
घर की चारदिवारी में मस्ती के साथ जिए हैं।
क्या मालूम उन्हें कितना परियों का लोक सुहाना,
उससे आगे बहुत दूर है, बहुत दूर तक जाना।

चलते-चलते नहीं पड़े, जिनके पैरों में छाले,
खुशियाँ क्या होती हैं, वे क्या जानेंगे मतवाले।
सुख काँटों के पथ से है, बचने का नहीं बहाना,
उससे आगे बहुत दूर है, बहुत दूर तक जाना।

एक बाग क्या, जब धरती पर बंजर मौज मनाएँ,
एक फूल क्या, जब पग-पग पर काँटे जाल बिछाएँ।

गली-गली में, डगर-डगर में है नंदन लहराना,

उससे आगे बहुत दूर है, बहुत दूर तक जाना।

(i) "बहुत दूर तक जाना" पंक्ति का आशय है—

(क) जीवन की यात्रा का लक्ष्य दूर है।

(ख) जीवन में बहुत कुछ प्राप्त करना है।

(ग) बहुत से काम करने हैं।

(घ) बहुत प्रगति करनी शेष है।

(ii) परियों के सुहावने लोक के आनन्द और सौन्दर्य को जानते हैं वे जो,—

(क) निरन्तर कर्म करते हैं।

(ख) थोड़ी सफलता में संतोष प्राप्त नहीं करते।

(ग) सफलता के लिए कष्ट उठाते हैं।

(घ) सतत गतिशील रहते हैं।

(iii) 'बस फूलों का बाग नहीं, जीवन में लक्ष्य हमारा' का आशय है—

(क) केवल फूलों के बाग का आनन्द ही लक्ष्य नहीं है।

(ख) थोड़ी सफलता प्राप्त करना उद्देश्य नहीं है।

(ग) आनंदपूर्ण जीवन जीना ही जीवन नहीं है।

(घ) जीवन को मौज-मस्ती से भरपूर बनाना ही लक्ष्य नहीं है।

(iv) प्रसन्नता का सच्चा आनंद मिलता है, उन्हें— ।

(क) जो जीवन में कष्ट उठाते हैं।

(ख) जो चलते-चलते थक जाते हैं।

(ग) जो कठिन परिश्रम करते हैं।

(घ) जो खुशी से जीवन-यापन करते हैं।

(v) कवि के अनुसार सुख करते हैं–

(क) कठिनाइयों से बचकर चलना।

(ख) कठिनाइयों को ठोकर मारकर चलना।

(ग) कठिनाइयों से समझौता करना।

(घ) कठिनाइयों से डर जाना।

4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

इस देश-धरा की व्यथा-कथा, निज टीस समझकर पहचानो।
संकट की दुर्दिन-वेला में, मानव की गरिमा को जानो॥
इस धरती पर तो अकर्मण्य को, जीने का अधिकार नहीं।
मानव कैसा, यदि मानवता से, हो स्वाभाविक प्यार नहीं॥
यह दुनिया का है अटल-चक्र, तुम मानो चाहे न मानो।
इस देश धरा की व्यथा-कथा, निज टीस समझ कर पहचानो॥
है हर्ष-विषाद निरंतर क्रम, या है सह जीवन का स्पंदन।
हैं कहीं गूँजते अट्टहास, तो कहीं मचलते हैं क्रंदन॥
क्यों पीछे दौड़े हो सुख के, दुख को भी तो अपना मानो।
इस देश-धरा की व्यथा-कथा, निज टीस समझकर पहचानो॥
अति दुर्गम ये राहें जग की, इनका है कोई पार नहीं।
संघर्ष सार है जीवन का कुछ विषय-भोग का द्वार नहीं॥
धारो जीवन में हंस-वृत्ति, फिर नीर-क्षीर अंतर जानो।
इस देश-धरा की व्यथा-कथा निज टीस समझकर पहचानो॥

(i) काव्यांश के अनुसार जीवन का सार है–

(क) आनंद।

(ख) संघर्ष।

(ग) अट्टहास।

(घ) उपहास।

(ii) ''इस देश-धरा की व्यथा-कथा, निज टीस समझकर पहचानो'' पंक्ति का आशय है कि—

(क) पराए दुख को अपना दुख समझो।

(ख) पराए दुख की परवाह मत करो।

(ग) मातृभूमि के संकटों को अपनी ही वेदना समझो।

(घ) मातृभूमि के संकटों से हमें क्या लेना देना।

(iii) 'जीवन का स्पन्दन' का भावार्थ है—

(क) जीवन का आधार।

(ख) जीवन का नियामक।

(ग) जीवन का विनाशक।

(घ) जीवन का संचालक।

(iv) ''हंस-वृत्ति धारण करने'' का आशय है—

(क) पानी एवं दूध का अंतर समझना।

(ख) भले-बुरे में भेद न करना।

(ग) सत्य-असत्य की पहचान करना।

(घ) सदा अच्छाई का साथ देना।

(v) 'फिर नीर-क्षीर अन्तर जानो' में अलंकार है—

(क) उपमा

(ख) रूपक

(ग) अनुप्रास

(घ) यमक

खण्ड 'ख'

(व्यावहारिक व्याकरण)

5. निम्नलिखित वाक्यों के रचना के आधार पर भेद लिखिए– 3

(क) सरला अपने घर में बैठकर ही पढ़ती रहती है।

(ख) ज्यों ही घंटी बजी त्यों ही सभी छात्र घरों की ओर चल पड़े।

(ग) कठिन परिश्रम करो और पास होकर दिखाओ।

6. निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए। 4

(क) पक्षियों से चुगा जाता है। (कर्तृवाच्य में)

(ख) चालाक लोग सदा भले लोगों को धोखा देते हैं। (कर्मवाच्य में)

(ग) शुभचिन्तक लोगों द्वारा सदा हित के कार्य किए जाते हैं। (कर्तृवाच्य में)

(घ) हम ऐसा लेख नहीं पढ़ सकेंगे। (कर्मवाच्य में)

7. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित का पद-परिचय लिखिए– 4

(क) सुरेश वहीं कुर्सी पर <u>बैठा</u> है।

(ख) तुम तो अपने <u>देश पर</u> मर मिटे हो।

(ग). सरला बहुत <u>सुन्दर</u> लेख लिखती है।

(घ) जयकिशन बहुत <u>धीरे-धीरे</u> चलता है।

8. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए– 4

(क) 'वात्सल्य' और 'अद्‌भुत रसों' के स्थायी भाव लिखिए।

(ख) नीचे अंकित पद्‌यांशों में निहित रसों के नाम लिखिए–

(i) बालधी बिसाल बिकराल ज्वाल जाल
मानो लंक लीलिबे कूँ इसना पसारी है।

(ii) दूल्हा जब नाचा, तभी घोड़ी चली।
याद आती नोटों की बरसात की॥
मची धमा चौकड़ी औ फूटी धार हास की॥

खण्ड 'ग'

(पाठ्य-पुस्तक)

9. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए— 2+2+1=5

"भादों की वह अँधेरी अधरतिया। अभी थोड़ी ही देर पहले मूसलधार वर्षा खत्म हुई है। बादलों की गरज, बिजली की तड़प में आपने कुछ नहीं सुना हो, किन्तु अब झिल्ली की झंकार या दादुरों की टर्र-टर्र बालगोबिन भगत के संगीत को अपने कोलाहल में डुबो नहीं सकतीं। उनकी खँजड़ी डिमक-डिमक बज रही है और वे गा रहे हैं, "गोदी में पियवा, चमक उठे सखिया, चिहुँक उठे ना?" हाँ, पिया तो गोद में ही है, किन्तु वह समझती है, वह अकेली है, चमक उठती है, चिहुँक उठती है। उसी भरे-बादलों वाले भादों की आधी रात में उनका यह गाना अँधेरे में अकस्मात कौंध उठने वाली बिजली की तरह किसे न चौंका देता? अरे, अब सारा संसार निस्तब्धता में सोया है, बालगोबिन भगत का संगीत जाग रहा है, जगा रहा है!"

(क) बालगोबिन भगत का संगीत किन परिस्थितियों में भी सुनने को मिल जाता था? उनके द्वारा कौन-सा वाद्य यंत्र बजाया जाता था?

(ख) भादों की आधी रात में भी ऐसी कौन-सी स्थिति होती थी कि गाँव के सभी लोग घने अँधेरे में यकायक चकित होकर जाग उठते थे?

(ग) बालगोबिन भगत के गीतों में निहित भाव तथा प्रभाव का उल्लेख कीजिए।

10. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए—

(i) खीरे को खाने योग्य बनाने के लिए नवाब साहब ने क्या-क्या किया और उन्हें किस तरह सजाकर रखा? पठित पाठ के आधार पर लिखिए। 2

(ii) पुनर्विवाह के प्रस्ताव को सुनकर पतोहू ने जो प्रतिक्रिया प्रकट की उससे उसकी कौन-सी चारित्रिक विशेषता उभरकर आती है? सोदाहरण लिखिए। 2

(iii) 'गैरिक वसन' शब्द का अर्थ लिखिए तथा बताइए कि "मानवीय करुणा की दिव्य चमक" पाठ में वर्णित! फादर की शव यात्रा के समय उपस्थित किस महापुरुष के संदर्भ में यह शब्द प्रयुक्त हुआ है? 2

(iv) लगातार दो वर्षों तक हालदार साहब, नेताजी की मूर्ति को पहनाए गए चश्मों में क्या परिवर्तन देखते रहे थे और उससे उन्हें कैसा अनुभव होता था? 2

(v) फादर कामिल बुल्के के परिवार में कौन-कौन लोग थे जिन्हें छोड़कर वे संन्यासी हुए थे? भारत आने पर उनसे कैसे सम्बन्ध रहे? 2

11. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 2+2+1=5

किन्तु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले–
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।
यह विडंबना! अरी सरलते तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं।
भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं।
उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।

(क) कवि "मेरा रस ले अपनी भरने वाले" शब्दों के माध्यम से किनकी और संकेत कर रहे हैं तथा वे किसे विडंबना मानते हैं।

(ख) कवि अपनी "मधुर चाँदनी रातों की" गाथाओं को क्यों नहीं बताना चाहते?

(ग) कविता की भाषा तथा कवि का नाम लिखिए।

12. (i) कवि के अनुसार फसल करोड़ों हाथों के स्पर्श तथा नदियों के पानी का जादू किस प्रकार है? समझाइए। 2

(ii) प्रसाद जी जीवन को कैसा और कितना बड़ा मानते हैं तथा उसके अनुपात में उस जीवन की कथाएँ कैसी हैं? स्पष्ट कीजिए। 2

(iii) शरद की चाँदनी रात्रि के अंबर की शोभा का वर्णन करने के लिए कवि ने जिन उपमानों को दर्शाया है उनमें से दो का उल्लेख कीजिए। 2

(iv) "पाट-पाट शोभा-श्री पट नहीं रही है" का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि किसकी शोभा श्री नहीं पटती हुई प्रतीत हो रही है? 2

(v) "प्रीति-नदी में पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी" में निहित अलंकार बताइए और इस पंक्ति में किस पर कटाक्ष किया गया है? 2

13. हमारे देश के सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक के प्रसंग में जो चिंता और प्रक्रियाएँ हुईं उनका संक्षिप्त उल्लेख करते हुए बताइए कि आपके मन में इस तंत्र के प्रति क्या-क्या धारणाएँ बनती हैं? 5

खण्ड 'घ'

(लेखन)

14. दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200-250 शब्दों में निबंध लिखिए। 10

(i) राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

- प्रस्तावना
- जीवन का प्रारंभ
- भारत आगमन और संघर्ष
- देश आजाद कराने में भूमिका व उनकी महत्ता
- उपसंहार

(ii) व्यायाम और जीवन

- प्रस्तावना
- व्यायाम का स्वरूप तथा महत्व
- व्यायाम से लाभ
- व्यायाम विहीन व्यक्ति की स्थिति
- उपसंहार

(iii) 'विज्ञान के बढ़ते चरण'

- भूमिका
- विज्ञान के नवीनतम आविष्कार
- विज्ञान की महत्ता एवं सुविधाएँ
- सावधानियाँ
- उपसंहार

15. वी.पी.पी. द्वारा मँगवाई गई पुस्तकों का पार्सल आपको खुला हुआ मिला है तथा उसमें से दो पुस्तकें भी गायब हैं। पोस्टमास्टर को पत्र लिखकर उनसे इस विषय की जाँच करने का अनुरोध करें। 5

16. निम्नांकित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और लगभग एक तिहाई शब्दों में उसका सार लिखिए। 5

यह भी स्मरणीय है कि हिन्दी एक 'असांप्रदायिक' भाषा है। इसकी लिपि अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक है और ध्वनि पर आधारित है, साथ ही हिन्दी की प्रकृति में सरलता भी है। यदि हमारे देशवासी राष्ट्रीय गौरव और अस्मिता की सही पहचान कर सकें तो हिन्दी को अपनाने में उन्हें अवश्य प्रसन्नता होगी। हिन्दी का इतिहास भी इस सच्चाई का प्रमाण प्रस्तुत करता है कि क्षेत्रीय भाषा और अंतः प्रांतीय व्यवहार में हिन्दी का प्रचलन था। फारसी सीमित क्षेत्र में प्रयुक्त होती थी। पहले हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद का अधिकारी पिनकाट महोदय जैसे अंग्रेजी विद्वान ने भी माना था। डॉ. सुनीति कुमार चैटर्जी और राजगोपालाचारी जैसे विद्वानों द्वारा राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का समर्थन किया गया था और सम्पूर्ण देश में हिन्दी को पढ़ने-पढ़ाने पर बल दिया गया था।